Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 09, (फरवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 27–28

शहरी खेती

शिवानी भडवाल[1] एवं प्रो. एच. पी. सिंह[2]

[1]शोधार्थी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

[2]वरिष्ठ प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश भारत।

Email Id: – shiwani07bhadwal@bhu.ac.in

परिचय:

कृषि क्षेत्र को लगातार विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो अस्थिर खाद्य आपूर्ति की समस्या पैदा करती है और देश में खाद्य सुरक्षा को सीधे खतरे में डालती है। इसके लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक विस्तार के कारण कृषि भूमि में कमी और पर्यावरणीय गिरावट हैं, ये सभी अस्थिर कृषि पद्धतियों में योगदान करते हैं। हाल के दिनों में शहरी खेती इन समस्याओं के एक आशाजनक समाधान के रूप में उभर रही है। इस नवोन्मेषी दृष्टिकोण में शहरी क्षेत्रों में फसलें उगाना, पशुधन बढ़ाना और भोजन के अन्य रूपों का उत्पादन करना शामिल है। यह शहरी और उनके उपनगरीय क्षेत्रों में कृषि पद्धतियों को संदर्भित करता है। कृषि गतिविधियों के लिए शहरी स्थानों का उपयोग करके, शहरी खेती संभावित रूप से भूमि को साफ करने की आवश्यकता के बिना वैश्विक खाद्य आपूर्ति को बढ़ा सकती है।

शहरी खेती के प्रकार:

शहरी खेती के विभिन्न प्रकार हैं–

बैकयार्ड फार्मिंग

- एक प्रकार की शहरी खेती है जो खाद्यान्न उगाने के लिए घर के पिछले हिस्से में की जाती है।
- अतिरिक्त उगाया हुआ भोजन संरक्षित और संग्रहित किया जाता है।

रूफटॉप फार्मिंग

- इमारतों की छत पर भोजन उगाने की विधि को रूफटॉप खेती कहा जाता है।
- यह तापमान नियंत्रण, वास्तुशिल्प वृद्धि, वन्यजीवों के लिए गलियारे, आवास और सजावटी लाभों के साथ मनोरंजन के अवसर प्रदान करती है।

वर्टिकल फार्मिंग

- वर्टिकल फार्मिंग में ज़मीन पर क्षैतिज रूप से खेती करने के बजाय ऊर्ध्वाधर रूप में खेती की जाती है।
- **हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स, एक्वापोनिक्स, ग्रीन वॉल्स** इसके प्रकार हैं।

शहरी खेती के लाभ:

शहरी खेती के लाभ निम्नलिखित हैं–

- **पर्यावरणीय स्थिरता:** घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में खाली जगहों, छतों और

ऊर्ध्वाधर स्थानों का लाभ उठाने से भूमि उपयोग दक्षता अधिकतम होती है और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।

- **व्यवसाय वृद्धिः** शहरी खेती रोजगार सृजन, आय सृजन और छोटे व्यवसायों की वृद्धि के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने में मदद करती है।
- **नौकरी सृजनः** शहरी फार्म कई बेरोजगारों को आय के एक स्थिर स्रोत के अलावा मूल्यवान कौशल और शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, भले ही यह मौसमी काम हो।
- **शहरी पुनर्विकासः** अप्रयुक्त भूमि और बंजर भूमि का उपयोग खेती के उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। यह अधिक हरित स्थान बनाता है और प्रदूषण को कम करता है। सामुदायिक उद्यानों और शहरी खेतों वाले क्षेत्र भी संपत्ति के मूल्य में वृद्धि करते हैं।
- **कम निवेशः** शहरी खेती के लिए कम जगह, प्रारंभिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। पारंपरिक खेती की तुलना में इसकी स्थापना लागत बहुत कम है।
- **जल संरक्षणः** हाइड्रोपोनिक्स, एक्वापोनिक्स आदि विधियों के उपयोग से कम पानी का उपयोग होता है।
- **खाद्य सुरक्षा और पहुंचः** शहरी कृषि के माध्यम से स्थानीय खाद्य उत्पादन में वृद्धि से किराने की दुकानों तक सीमित पहुंच वाले क्षेत्रों में ताजा, पौष्टिक उपज तक पहुंच सुनिश्चित होती है, जिससे खाद्य सुरक्षा संबंधी चिंताएं दूर होती हैं।

शहरी खेती के लिए चुनौतियाँः

शहरी खेती की चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं–

- **सीमित भूमि की उपलब्धताः** शहरी खेती के लिए प्राथमिक बाधाओं में से एक शहरी क्षेत्रों में उपयुक्त भूमि की कमी है। शहरी भूमि की विभिन्न उपयोगों के लिए अत्यधिक मांग होती है, जिससे किसानों के लिए खाद्य उत्पादन के लिए आवश्यक स्थान सुरक्षित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **भूमि की उच्च लागतः** बड़े पैमाने पर शहरी फार्मों की स्थापना भूमि की उच्च कीमतों के कारण बाधित होती है क्योंकि यह शहरी खेती को आर्थिक रूप से अव्यवहार्य बना देती हैं।
- **पानी की उपलब्धताः** कई शहरी क्षेत्रों में पानी की कमी एक आम समस्या है, किसान अक्सर अपनी फसलों और पशुओं की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त पानी प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हैं।
- **मिट्टी की गुणवत्ता और संदूषणः** शहरी खेती को प्रदूषकों, भारी धातुओं या रसायनों से संदूषण के कारण मिट्टी की खराब उर्वरता की समस्या का सामना करना पड़ता है, जो पौधों के विकास और खाद्य सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा करता है।
- **ज्ञान और कौशल का अंतरः** सफल शहरी खेती के लिए शहरी कृषि तकनीकों जैसे ऊर्ध्वाधर बागवानी, हाइड्रोपोनिक्स और प्रभावी कीट प्रबंधन में विशेष ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होती है।

समापनः

शहरी खेती के कई लाभ हैं और यह खाद्य सुरक्षा के साथ–साथ शहरी उत्थान के लिए एक व्यवहार्य समाधान प्रदान करता है। हालाँकि शहरी खेती में भी अलग–अलग चुनौतियाँ हैं, लेकिन इन्हें तकनीकी समाधान लागू करके, कौशल अंतर को पाटकर, सामुदायिक परियोजनाएँ शुरू करके, उचित नीतियों और निवेश द्वारा संबोधित किया जा सकता है। इसके साथ ही, शहरी खेती भविष्य की स्थिरता संकट के लिए संभावित अवसरों और व्यवहार्य समाधानों में से एक है। अतः शहरी खेती के समुचित उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।